पाठ 13

सुभाषचंद्र बोस का पत्र

– संकलित

6MACQX

'नेता जी' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ओजस्वी सेनानी सुभाषचंद्र बोस ने यह पत्र 'केसरी' पत्रिका के संपादक श्री एन. सी केलकर के नाम बर्मा के मांडले जेल से लिखा। बोस को जब बरहमपुर (बंगाल) जेल से मांडले जेल स्थानांतरित किया गया तो उस जेल में पहुँचने के बाद उनकी स्मृति में यह बात कौंधी कि महान क्रांतिकारी और कांग्रेस (गरम दल) के नेता 'लोकमान्य' बाल गंगा धर तिलक ने अपने कारावास के अधिकांश भाग बेहद हतोत्साहित कर देने वाले इसी परिवेश में व्यतीत किए थे। कारावास के छह वर्ष लोकमान्य ने अत्यंत शारीरिक और मानसिक यंत्रणा में बिताए फिर भी उस त्रासद स्थिति में 'गीता भाष्य' जैसी ग्रन्थ की रचना की। मांडले जेल–जीवन के बारे में बोस के शब्द हैं "मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगीं। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत के एक माहन सपूत लगातार छह वर्ष तक रहे।"

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देनेवाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं

से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था।

उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थितिवाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

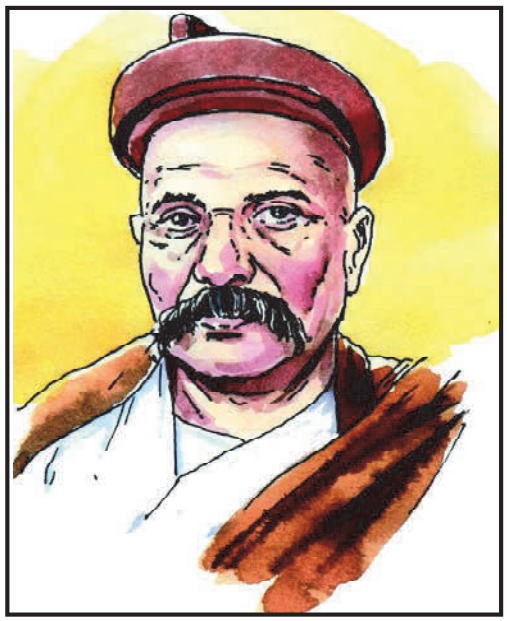

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड–संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देनेवाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देनेवाली है और धीरे–धीरे, वह व्यक्ति की जीवन–शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा?

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं।

वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा, ''अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।'' यह विश्व भगवान् की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग–निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था। अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गए थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,

सुभाषचंद्र बोस

टिप्पणी

एन.सी.केलकर – तत्कालीन विदर्भ के काँग्रेस के वरिष्ठ नेता। बाद में 'स्वराज्य दल' में सम्मिलित हो गए थे। लोकमान्य तिलक के निधन के पश्चात् 'केसरी' पत्रिका का सम्पादन श्री केलकर ने ही सँभाला था।

शंकर व रामानुज – शंकराचार्य और रामानुज भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक थे। इन्होंने अपने–अपने ग्रंथों में ब्रह्म, जगत्, जीव आदि दार्शनिक तत्वों पर अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं और वेदों का भाष्य लिखा है।

अभ्यास

पाठ से

1. नेता जी ने केलकर को पत्र क्यों लिखा ?
2. लोकमान्य ने अपने जीवन का छह वर्ष कहाँ और क्यों गुजारा ?
3. सुभाषचंद्र बोस ने भगवान को धन्यवाद क्यों दिया ?
4. सुभाषचंद्र बोस ने जेलों को तीर्थस्थल क्यों कहा है ?
5. लोकमान्य को कारावास में सांत्वना देनेवाली वस्तु क्या थी ?
6. लोकमान्य दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे, कैसे ?
7. 'लोकमान्य तिलक' ने किस पुस्तक की रचना की और उसका विषय क्या है ?
8. नेता जी के अनुसार आजकल के नौजवान को माँडले के जलवायु से क्या शिकायत है ?

पाठ से आगे

1. पाठ में लिखा है कि उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकाकी रहते थे। एकाकीपन में पुस्तक कैसे सांत्वना देती हैं और एकाकीपन को कैसे दूर करते हैं। आपस में बातचीत कर पुस्तक के उपयोग पर अपनी समझ लिखिए।

2. कारावास अथवा जेल जीवन हमारे घर के जीवन अथवा आम जन जीवन से कैसे अलग है? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
3. कल्पना कर लिखिए कि जब नौजवानों को उस जलवायु से इतनी शिकायत थी तो मधुमेह से ग्रस्त वृद्ध लोकमान्य को कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा।
4. लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह वर्ष उन कठिन परिस्थितियों में क्यों बिताने पड़े? साथियों और शिक्षकों से चर्चा कर लिखिए।
5. नेता जी का मानना है कि सुदीर्घ कारावास के अंधकारमय दिनों में भी लोकमान्य ने अपनी मातृभूमि के लिए अमूल्य भेंट तैयार की इसलिए उन्हें विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम स्थान मिलना चाहिए। प्रथम श्रेणी का यहाँ क्या अर्थ है? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

भाषा से

1. देशवासी अर्थात देश में रहनेवाले, कारावास–कारा में वास, राजनीति– राजा की नीति पाठ में इस प्रकार के बहुत सारे सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है। उनका विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

राजबंदी, तीर्थस्थल, बहुमूल्य, लोकमान्य, महापुरुष, स्थानान्तरण, चहारदीवारी, एकाग्रचित, घटनाचक्र

2. निम्नलिखित अवतरण में कुछ विराम चिह्न छूट गए हैं उनका यथास्थान प्रयोग कीजिए–

लेकिन कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता है उन अनेक छोटी–छोटी बातों का जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की–सी चुभन बन जाती है और जीवन को दूभर बना देती है। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे। और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने यंत्रणाओं के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा।

3. पाठ में दिए गए इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

'वहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्षों तक रहा' यहाँ पर 'महानतम' शब्द गुणवाचक विशेषण का तुलनाबोधक रूप है। मूल शब्द महान है उत्तर अवस्था महानतर उत्तमावस्था महानतम है, जैसे अधिक–अधिकतर–अधिकतम , सुंदर–सुंदरतर–सुंदरतम

इसी प्रकार के पाँच विशेषण के शब्दों में तर, तम जोड़कर उनके रूप लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. गीता भाष्य क्या है ? इसके संबंध में अपने शिक्षकों से पूछकर इसके ऊपर अपनी समझ को लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. जेल जीवन के अनुभव और कठिनाइयों के बारे में अनेक महापुरुषों जैसे गाँधी, नेहरु, जयप्रकाश ने पत्र लिखे हैं। उन्हें खोजकर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

●●●